International Journal of Sanskrit Research 2022; 8(3): 01-02

International Journal of Sanskrit Research
अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(3): 01-02
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 01-03-2022
Accepted: 04-04-2022

प्रियंका
शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
प्रियंका
शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

नारायण न्यायपंचानन कृत 'गणप्रकाश'

प्रियंका

शोधसार
संस्कृत व्याकरण सम्प्रदाय पंचांगी उपलब्ध होते हैं। पंचांगों में व्याकरण के साथ–साथ धातुपाठ, गणपाठ, उणादिकोश एवं लिंगानुशासन भी उपलब्ध होते हैं। गणपाठ शब्द में गणशब्द का यौगिक अर्थग्रहण न करके योगरूढ अर्थ करना चाहिए जिससे गणपाठ शब्द से प्रातिपदिकपाठ अर्थ उपस्थित होता है। गणपाठ के माध्यम से किसी भी व्याकरण का संक्षिप्तत्व बना रहता है। व्याकरण का कोई भी सूत्र अनेक शब्दसमूहों से प्रत्ययविधान स्वरविधान एवं साधुत्व–असाधुत्वादि का निर्धारण करने में गणपाठ के माध्यम से ही समर्थ हो पाता है। आचार्य पाणिनि द्वारा चौथी शताब्दी ईसापूर्व में निर्धारित गणपाठ का अनुकरण अर्वाचीन कालीन सभी व्याकरण सम्प्रदायों में हुआ है। संक्षिप्तसार नामक व्याकरण सम्प्रदाय में भी पाणिनीय गणपाठ का अनुकरण देखा जा सकता है। यह व्याकरण संप्रदाय जौमर नाम से भी जाना जाता है। इस व्याकरण सम्प्रदाय के गणपाठ की व्याख्या आचार्य नारायण न्यायपंचानन द्वारा गणप्रकाश नामक ग्रन्थ में की गई है। गणप्रकाश में कुल 127 गण प्राप्त होते हैं जोकि कृत् एवं तद्धित सूत्रोक्त गणशब्दों से सम्बन्धित है। पाणिनीय गणपाठ की तुलना में शब्दों की संख्या के विषय में न्यूनाधिकता अवश्य है। कुछ गणों का आदि शब्द परिवर्तित हो गया है अन्य सभी शब्द गणविशेष के ही प्राप्त होते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से गणप्रकाश की उपलब्धता, विषयवस्तु एवं अन्य व्याख्या ग्रन्थों से पृथक् वैशिष्ट्य आदि ज्ञापित करने का प्रयास किया जाएगा।

कूटशब्दः नारायण न्यायपंचानन, कृत, 'गणप्रकाश', गणपाठ

प्रस्तावना
आचार्य नारायण न्यायपंचानन कृत गणप्रकाश नामक ग्रन्थ संक्षिप्तसार नामक व्याकरण में प्रयुक्त गणों की व्याख्या रूप में लिखा गया है। इस ग्रन्थ का समय 18वीं शती पूर्वार्ध स्वीकार किया गया है जिसका निर्देश 'गणपाठ : ए क्रिटिकल स्टडी' नामक शोधप्रबन्ध में भी मिलता है। [1] सम्प्रति यह ग्रन्थ अप्रकाशित पाण्डुलिपि के रूप में उपलब्ध होता है। संस्कृत भाषा के बंगाली लिप्यन्तरण के रूप में उपलब्ध यह ग्रन्थ इण्डिया ऑफिस लाइब्रेरी (10838) से प्राप्य है अन्य किसी स्थान पर इसकी प्राप्ति के निर्देश प्राप्त नहीं हुए हैं। इस ग्रन्थ के प्रथमपृष्ठ पर संक्षिप्तसार व्याकरण, गणप्रकाश एवं नारायण न्यायपंचानन से 3 शब्द ही प्राप्त होते हैं। कुल 130 पृष्ठों के इस ग्रन्थ के प्रत्येक पृष्ठ पर 8 पंक्तियाँ उपलब्ध होती हैं तथा प्रत्येक पंक्ति में 50–60 वर्ण उपलब्ध होते हैं। इस ग्रन्थ में प्रत्येक गणगत शब्दों की संख्या भी निर्दिष्ट है। यह ग्रन्थ पूर्ण है इसका ज्ञान ग्रन्थ के आरम्भिक श्लोकों के मंगलाचरण एवं पुष्पिका से हो जाता है।
गणप्रकाश के आरम्भिक श्लोक से ग्रन्थनाम एवं ग्रन्थ कर्ता का ज्ञान होता है। "नत्वा कृष्णपदद्वन्द्वमर्चितैकान्तसाधनं। गणप्रकाशः क्रियते न्यायपञ्चाननेन च"। [2] यह ग्रन्थ उपाध्यायसर्वस्व एवं धातुपारायण ग्रन्थों के सहाय से गणगत शब्दों की प्रकृति, प्रत्ययादि का निर्देश करते हुए लिखा गया है। "दृष्ट्वोपाध्यायसर्वस्वं धातुपारायणादिकं। असंदेहाय साध्यन्ति प्रकृतिप्रत्ययैर्गणाः"। [3] अन्य ग्रन्थों की टीका, व्याख्या एवं वृत्तिपाठ का भी ग्रन्थ निर्माण में सहाय का ग्रन्थकर्ता ने आरम्भ में निर्देश कर दिया है। ग्रन्थ की पुष्पिका से ज्ञान होता है कि नारायण न्यायपंचानन के पिता का नाम विद्याविनोद था। पुष्पिका इस प्रकार है –

"इति पूर्वग्रामिकुलकलानिधिमहामहो– पाध्यायविद्याविनोदात्मजश्रीमदाचार्यपञ्चाननकृतो गणप्रकाशः" [4]।

गणप्रकाश ग्रन्थ में प्राप्त होने वाले गणों के नाम इस प्रकार से हैं– अजादि। क्रौड्यादि। दैवयज्ञादि। नदादि। मात्रादि। शक्त्यादि। इन्द्रादि। एकादि। अग्न्यादि। भिक्षादि। खण्डिकादि। पाशादि। कुन्दुमादि। मरुत्वादि। राजन्यादि। भौरिक्यादि। ऐषुकार्यादि। वसन्तादि। उक्थादि। शिवादि। विदादि। उदुम्बरादि। बाह्वादि। व्यासादि। कुर्वादि। शुभ्रादि। सुभगादि। रेवत्यादि। जण्टादि। तिकादि। वाकिनादि। भागवित्त्यादि। गर्गादि। अश्वादि। कुञ्जादि। सुवास्त्वादि। संकलादि। तृणादि। प्रेक्षादि। अश्मादि। सख्यादि। संकाशादि। बलादि। पक्षादि। कर्णादि। सुतङ्गमादि। वराहादि। कुमुदादि। अरीहणादि। कृशाश्वादि। ऋष्यादि। गर्तादि। काशादि। मध्वादि। उत्करादि। नडादि। वाहीकादि। कच्छादि। कत्र्यादि। नद्यादि। कादि। दिवादि। काश्यादि। धूमादि। गहादि। अध्यात्मादि। दिशादि। मुखादि। अङ्गुल्यादि। ऋगयनादि। ऋणादि। शुण्डिकादि। सीतान्वेषणादि। सिन्ध्वादि। शण्डिकादि। शौनकादि। मक्षिकादि। कुलालादि। रैवतिकादि। बिल्वादि। रजतादि। पलाशादि। शरादि। उत्सादि। अश्वपत्यादि। दण्डादि। दक्षिणादि। छिदादि। अश्वादि। वातादि। आढकादि। पर्णादि। वेतनादि। वस्नादि। उत्सङ्गादि। भस्त्रादि। अक्षद्यूतादि। व्युष्टादि। महानाम्न्यादि। संतापादि। उत्थापनादि। धनादि। योजनादि। उत्तरादि। पारायणादि। प्रभूतादि। अनुपदादि। अर्थादि। महिष्यादि। केशरादि। छत्रादि। युगादि। प्रतिजनादि। कथादि। पत्यादि। राजादि। खलादि। गवादि। अपूपादि। चतुरादि। पृथ्वादि। दृढादि। ब्राह्मणादि। मित्रादि। पुरोहितादि। उद्गात्रादि। युवादि। मनोज्ञादि। उपरोक्त 127 गणों में से 68 गणों के नाम पाणिनीय गणपाठ में भी इसी भांति प्राप्त होते हैं परन्तु गणगत शब्दों की संख्या के विषय में भिन्नता अवश्य है। जहाँ पाणिनीय गणपाठ में प्रायः अधिक शब्द प्राप्त होते है वहीं गणप्रकाश में शब्दों की न्यूनता दिखाई देती है। अष्टाध्यायी की काशिकावृत्ति में निर्दिष्ट वार्तिकों के अन्तर्गत आने वाले गणों की भी व्याख्या इस ग्रन्थ में प्राप्त होती है।

गणप्रकाश नामक इस ग्रन्थ की विशेषताएँ इस प्रकार हैं। यहाँ समान धातु (प्रकृति), प्रत्ययादि वाले शब्दों को साथ रखा गया है। यथा – अभ्यूष/अवोष – अभिपूर्व उष दाहे इजुपान्तत्वादत् बाहुल्यात् दीर्घः अभ्यूष। एवं अवपूर्वादवोष [5]। दीप, प्रदीप – दीपी दीप्तौ केवलात् प्रपूर्वाच्च इजुपान्तत्वादत् दीप, प्रदीप [6]। एकभाव, द्विभाव, त्रिभाव, अन्यभाव – भू सत्तायां भावेमण भावः एकादीनां भाव इति षष्ठीतत्पुरुषः एकभाव, द्विभाव, त्रिभाव, अन्यभाव अत्र स्वरूप मात्रे भावः प्रत्ययः [7]। उदगातृ, प्रशास्तृ, होतृ, पोतृ, प्रतिहर्तृ – प्राणि उत् पूर्व कै गै शब्दे उत् पूर्व णीञ् प्रापणे प्रपूर्वात् शासु अनुशिष्टौ हु दाने डुभृञ् धारणपोषणयोः प्रतिपूर्व हन हिंसागत्योः एभ्यः तृ शंसादेरिति तृः उद्गातृ प्रशास्तृ होतृ पोतृ प्रतिहर्तृ [8]।

यहाँ शब्दों की धातु, प्रत्यय विधानादि सम्पूर्ण शब्दसिद्धि का निर्देश है यथा – गो – गम्लृ गतौ गमेर्डोरिति डोः डित्वाद् म लुक् गो [9]। इक्षु – इषु इहायां ईषेः सुरिति सुः कत्वं षत्वं इक्षु [10]। रथ – रमु क्रीडायां हनादेस्थ इति थः बाहुल्यात् म लुक् रथ [11]। अश्व – अशू व्याप्तौ विशादित्वात् वः अश्वः [12]।

इस ग्रन्थ में शब्दों में विहित प्रत्ययों के अर्थविशेष का भी निर्देश प्राप्त होता है – यथा – पण्डितः – पडि गत्यर्थः गुर्वादि हनन्तत्वात् आत् पण्डा ततः तदस्य संजातमित्यर्थे तारकादित्वादितः पण्डितः [13]। ग्रामपुत्र ग्रामपदेन ग्रामस्थो लोको लक्ष्यते तस्य पुत्र ग्रामपुत्रः [14]। ब्राह्मण ब्रह्मणोऽपत्यं जातिरिति तस्यापत्ये इति टण जातौ ब्रह्मण इति न लुक् निषेधः ब्राह्मण [15]। बहुभाषिन् बहुभाषितं शीलम्स्येति णिन् तच्छीलादौ सुपीति णिन् बहुभाषिन् [16]। यथाकाम यथाशब्दस्य कामशब्देन सह यथेत्यस्या सादृश्ये इत्यव्ययीभावः यथाकाम अनतिक्रमोऽत्रार्थः [17]। इत्यादि।

शब्दसिद्धि दर्शाने के लिए एकाधिक धातुओं का प्रयोग भी प्राप्त होता है – यथा – अजा अजा अल्पार्थे नञ्युपपदे जनी प्रादुर्भावे इत्यस्मात् अल्पेन समयेन जायते इत्यर्थे अन्यतोऽपि दृश्यते इति डः डित्वादनलुक् अथवा अज गतिक्षेपणयोः पठादित्वादडः अनङ्क्येषु वीरिति न वीभावः [18]। जड जन धान्ये ज्वनादित्वात् ड् नस्य डः जडयत्वात् जड जनी प्रादुर्भावे मनणन्ताङ् ङ् इति डः बाहुल्यान्न लुक् जड [19]। दीर्घ दृ विदारणे घ प्रत्ययः ऋदिरितीर रान्तादेरित्यादिना दीर्घः औणादिकाः प्रत्यया ऊहनीयाः। तथा चोक्तं एतानिदिङ् मात्राण्येव प्रकृतिप्रत्ययागमादयो यथासम्भवं परिकल्पनीया इति [20]। इस प्रकार निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि नारायण न्यायपंचानन के 'गणप्रकाश' नामक ग्रन्थ में शब्दों के प्रकृति, प्रत्ययादि के विषय में नवीनता अवश्य प्राप्त की जा सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. संस्कृत व्याकरणशास्त्र का इतिहास, युधिष्ठिर मीमांसक, भाग–2, पृ. 170
2. गणप्रकाश, नारायण न्यायपंचानन, पृ. 2
3. वही, पृ. 2
4. वही, पृ. 130
5. वही, पृ. 122
6. वही, पृ. 123
7. वही, पृ. 126
8. वही, पृ. 128
9. वही, पृ. 121
10. वही, पृ. 122
11. वही, पृ. 121
12. वही, पृ. 2
13. वही, पृ. 125
14. वही, पृ. 129
15. वही, पृ. 125
16. वही, पृ. 126
17. वही, पृ. 127
18. वही, पृ. 2
19. वही, पृ. 124
20. वही, पृ. 123